10 और 11 मार्च 2018 को नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय जनप्रतिनिधि सम्मेलन के समापन सत्र में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का समापन **भाषण**

1. आज इस दो दिवसीय राष्ट्रीय जनप्रतिनिधि सम्मेलन के समापन के अवसर पर मुझे बहुत संतोष की अनुभूति हो रही है। इस सम्मेलन की सफलता हमारे जनप्रतिनिधियों की विकास और सुशासन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

2. मुझे बहुत खुशी हुई कि आप सभी प्रतिनिधियों ने चर्चा के विषयों पर आपकी सक्रिय सहभागिता और गहरी रुचि ने इसको सही अर्थों में सार्थक किया।

3. हम सभी माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में शामिल होने के लिए अपने अति व्यस्त कार्यक्रम में से समय निकाला और प्रेरक विचार रखे। मैं सधन्यवाद यह भी कहना चाहूंगी कि मैंने जब भी उन्हें इस तरह के कार्यक्रम के लिए आग्रह किया है, उन्होंने सहर्ष स्वीकारा है।

4. अपने भाषण में उन्होंने राष्ट्र के निर्माण में 101 Aspirational Districts के overall development के विषय में सारगर्भित दर्शन जनप्रतिनिधियों के समक्ष प्रस्तुत किया। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि जनप्रतिनिधि का उद्देश्य जनता के लिए काम आना है। उन्होंने Cooperative Federalism की ओर जनप्रतिनिधियों का ध्यान आकर्षित किया और विकास के लिए good governance, plan and schemes के effective implementation, social justice के साथ–साथ जनभागीदारी की वकालत की। उन्होंने कहा कि हर घर, हर गांव, हर जिले में विकास की किरण एक समान पहुंचनी चाहिए।

5. मैं देश के उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडु जी का धन्यवाद करती हूं कि उन्होंने अपने ज्ञान, अनुभव एवं प्रशासनिक कौशल से सभी प्रतिभागियों को अभिसिंचित किया।

6. मैं माननीय वित्त मंत्री श्री अरूण जेटली जी, माननीय सड़क परिवहन मंत्री श्री नितिन जयराम गडकरी जी, माननीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री सुरेश प्रभु जी,

लोक सभा उपाध्यक्ष डॉ. एम. तम्बि दुरई जी, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री जे.पी. नड्डा, ग्रामीण विकास एवं खान मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर जी, मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर जी, राज्य सभा के नेता प्रतिपक्ष श्री गुलाम नबी आज़ाद, माननीय संसद सदस्य श्री भर्तृहरि महताब, श्री कल्याण बनर्जी एवं श्री एन.के. प्रेमचन्द्रन का आभार व्यक्त करती हूं जिन्होंने विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता की एवं देश भर से आए सभी जनप्रतिनिधियों का मार्गदर्शन किया।

7. मैं नीति आयोग के CEO श्री अमिताभ कांत एवं उनकी पूरी टीम को धन्यवाद देती हूं कि उन्होंने देश में विकास के बारे में चल रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के बारे में 360^0 चित्र प्रस्तुत किया और सभी प्रतिभागियों को सटीक एवं उपयोगी जानकारी दी।

8. वहीं माननीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री सुरेश प्रभु जी ने resource management, alternative resources की व्यवस्था, उपलब्ध संसाधनों के समुचित उपयोग विशेषकर भूमिगत जल, ऊर्जा स्रोतों एवं जलवायु परिवर्तन के परस्पर जटिल चक्र पर बहुत ही प्रेरणादायी व्याख्यान दिया और कई विषयों की व्यावहारिक चर्चा की।

9. लोक सभा के उपाध्यक्ष श्री एम. तम्बि दुरई जी ने भी अपने विचारों से जनप्रतिनिधियों को प्रेरित किया एवं Sustainable Development की आवश्यकता पर बल दिया।

10. इस सम्मेलन के दौरान हमने दो महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की, `विकास *प्रक्रिया में जनप्रतिनिधियों की भूमिका* ***(Role of Legislator's in development process)***´ और `*विकास में संसाधनों का इष्टतम उपयोग* ***(Optimum use of resources in the development)***´। इन चर्चाओं के दौरान हमें अपनी विकास संबंधी प्राथमिकताओं और राष्ट्र निर्माण के प्रति अपनी वचनबद्धता दोहराने का एक अच्छा अवसर प्राप्त हुआ।

11. इस सम्मेलन के समानांतर सत्र में चर्चा के दौरान प्रतिभागियों ने बहुत रुचि दिखाई, प्रश्न पूछे, अपने सुझाव दिए, विभिन्न नीतियों को लेकर अपनी समस्याएं बताईं एवं उसके संभावित समाधान बताए। इन विधायकों के प्रश्न एवं समस्याओं को सुनकर मुझे गर्व हुआ कि हमारे जनप्रतिनिधि जनकल्याण की भावना को लेकर बहुत संवेदनशील है एवं वे चाहते हैं कि जनकल्याणकारी नीतियां पूरी तरह से लागू हों और जन–जन को उनका लाभ मिले।

12. विधानमंडलों की सबसे बड़ी ताकत उनकी व्यापक पहुंच और जमीनी स्तर पर लोगों के विकास संबंधी विविध सरोकारों की गहन समझ है। हम जानते हैं कि व्यष्टि, समष्टि, समाज एवं देश में परस्पर काफी घनिष्ठ संबंध है और सब एक दूसरे पर आधारित हैं। अतः, समृद्ध, विकसित एवं प्रतिष्ठित राष्ट्र के निर्माण में जनता, जनप्रतिनिधियों एवं शासन के विभिन्न स्तम्भों का परस्पर संतुलित सहयोग, साझेदारी, सामुदायिकता एवं समरसता सदैव वांछित है।

13. हमारे हर छोटे–छोटे सामूहिक प्रयास ही उन बडे–बड़े विकास कार्यों की नींव बनेंगे जो हमारे गांव–गांव के हर व्यक्ति को विकास की मुख्य धारा से जोड़ देंगे और अन्त्योदय का स्वप्न साकार होगा। हम सबने ''न्यू इंडिया'' का जो सपना देखा है, वह आप सबके सामूहिक प्रयासों से अवश्य पूर्ण होगा।यहां पर मैं कहना चाहूंगी किः–

''जल बिन्दु निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
स हेतुः सर्वविद्यानाम् धर्मस्य च धनस्य च।''

(Each drop of water, the pitcher gradually gets filled and similarly, knowledge, merit and wealth are acquired.)

14. मित्रो, हर अंत में एक नई शुरुआत छिपी होती है। इस सम्मेलन का समापन भी अपने आप में एक अंत नहीं है बल्कि चर्चा, नई रणनीतियां तैयार किये जाने और नए अभूतपूर्व संकल्पों को पारित किए जाने के परिणामस्वरुप नए उत्साह से किए जाने वाले प्रयासों की शुरूआत है। आपके समर्थन और आपकी प्रतिभागिता को देखते

हुए मैं बहुत खुशी के साथ यह कह सकती हूं कि इस सम्मेलन के आयोजन का मेरा फैसला सर्वथा उचित था।

15. मैं संसद की दोनों सभाओं और राज्य विधानमंडलों के सदस्यों को उनके उत्साहजनक सहयोग और बौद्धिक योगदान के लिए धन्यवाद देती हूं। मैं अत्यधिक कुशल और प्रतिभाशाली संसद सदस्यों के कोर ग्रुप और पूर्व सदस्यों की भी सराहना करती हूं जिन्होंने इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिए भरसक प्रयास किए। आप सबने जो कड़ी मेहनत की है, उसके लिए मैं आपको बधाई देती हूं और धन्यवाद भी। मैं श्री ओम बिड़ला, श्री दीपेंद्र सिंह हुड्डा, डॉक्टर हिना विजय कुमार गावित, श्रीमती कविता कल्वकुंतला, श्रीमती गीता कोथापल्ली, श्री अजय `टेनी' मिश्रा, श्री प्रदीप गांधी, श्रीमती भावना दवे एवं SRI के Hony. Advisor श्री राहुल देव जी का विशेष धन्यवाद करती हूं।

16. हम विभिन्न सत्रों के अध्यक्षों और मंच संचालकों की सक्रिय सहभागिता और बहुमूल्य योगदान की सराहना करते हैं।

17. मैं लोक सभा की महासचिव, श्रीमती स्नेहलता श्रीवास्तव और उनके अधिकारियों की टीम को सम्मेलन को सफल बनाने के लिए किए गए सराहनीय प्रयासों के लिए बधाई देती हूं। जिस बारीकी से उन्होंने सम्मेलन के प्रत्येक पहलू को ध्यान में रखा, वह निश्चय ही प्रशंसनीय है। मैं राज्य सभा के महासचिव, श्री देश दीपक वर्मा को उनकी सहायता और सहयोग के लिए धन्यवाद देती हूं।

18. लोक सभा सचिवालय के अधिकारियों और कर्मचारियों की कड़ी मेहनत और निष्ठावान प्रयासों के लिए मैं उनकी सराहना करती हूं। शोध और सूचना प्रभाग ने इस सम्मेलन के लिए संक्षिप्त विवरण, बुलेटिन और रिपोर्टों के रूप में जानकारी प्रदान की, वहीं सम्मेलन शाखा और अन्य शाखाओं ने बारीकी से इसकी रूपरेखा तैयार करते हुए सम्मेलन का आयोजन किया। उनकी लगन और मेहनत के बिना इस सम्मेलन को आयोजित करना संभव नहीं हो पाता।

19. मैं इस सम्मेलन के आयोजन में शामिल हमारी सुरक्षा सेवाओं, सीपीडब्ल्यूडी और अन्य विभिन्न एजेंसियों को भी हार्दिक धन्यवाद देती हूं। इस अवसर पर मैं प्रिंट

और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में इस सम्मेलन की उत्कृष्ट कवरेज के लिए मीडिया को भी हार्दिक धन्यवाद देती हूं।

21. लोक सभा सचिवालय का शोध और सूचना प्रभाग सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट तैयार करेगा और सभी गण्यमान्य प्रतिनिधियों को उपलब्ध कराएगा। एक बार पुनः राष्ट्रीय जनप्रतिनिधि सम्मेलन में आए हुए सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद देती हूं।

22. मैं ऋग्वेद के 10वें अध्याय के श्लोक सं. 191 के साथ अपनी बात समाप्त करती हूं:–

''समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।''

(इसका अर्थ है– हमारे लक्ष्य समान हों, हमारी सोच समान हो, हमारा मन समान हो। इस एकता के लिए मैं एक समान मंत्र देती हूं कि आपके उद्देश्य और आपकी आकांक्षाएं समान हों ताकि यह समान उद्देश्य हम सबको एक कर सकें।)

धन्यवाद।

————————